॥ हरिः ॐ ॥

'पूज्य श्रीमोटा की बैठक' हरिः ॐ आश्रम, सुरत

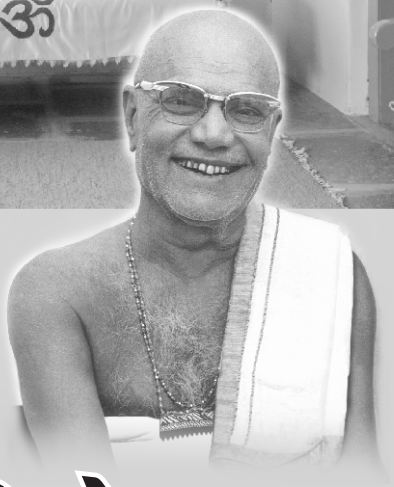

पूज्य श्रीमोटा

द्वारा स्थापित
हरिः ॐ आश्रम के मौनमंदिरों के
विषय में सूचनाएँ

॥ हरि:ॐ ॥

उत्तम आश्रम के लिए श्रीमोटा का दर्शन

सन् 1946 में स्वजनों की ओर से श्रीमोटा से कहा गया–'मोटा, आपका आश्रम होना चाहिए, जिससे समाज के बड़े जनसमुदाय के लोग आपसे मिल सकें और श्रीप्रभु की कृपा का अनुभव कर सकें।' इस बात के उत्तर में पूज्य श्रीमोटाने लिखा है कि–'भगवान की चेतनाशक्ति, प्रभुभावना अपने मूल स्त्रोत से यहाँ वहाँ सब तरफ बहती है, प्रसरण करती है, जैसे बिजली अपने मूल बिजली घर से यहाँ वहाँ हर तरफ गति करती है। उसकी चेतनाशक्ति का यह अपने आप हो रहा प्रसरण बना रहें और ऐसा हमारे प्रत्यक्ष अनुभव में आया करें और ऐसी सहज भावना हमारे अन्तर्मन में जगें, तब आश्रम की बात उचित होगी। अभी तक ऐसी प्रेरणा नहीं मिल सकी है। जितने जन, प्रभु प्रसादी के रुप में मिले हैं, उनका जीवन भगवदीय होता हुआ अनुभव कर सकें, तब ही प्रस्थापित आश्रम प्रभुकृपा से सोभायमान होगा।'

'सबके पास ऐसी चेतना शक्ति है। इसलिए, जो कोई अपने पास आएँ, मिलें, जिसके साथ सम्बन्ध बंधें, तब बार बार नम्रता धारण करके उनमें ऊँची समझदारी जगाने का हम प्रयत्न करें, उनको धर्म-भावना में रस लेने के लिए प्रेरित करें, और संसारी रागद्वैष एवं ईर्ष्या के झगड़े टालने के लिए समझाया करें, और श्रीभगवान के नाम स्मरण द्वारा उनकी भक्ति में मन रमाए रखने के लिए कहते रहें। जो जो कुछ हुआ करता है, वह प्रिय प्रभु के लिए ही है और उसे भी जो जो कुछ होता है वह सब प्रेमभक्ति ज्ञानभाव से प्रभु को समर्पित होता रहें, ऐसा हो तो, उसके जैसा दूसरा कोई उत्तम आश्रम

नहीं हो शकता। श्रीप्रभुकृपा से जो स्वजन ऐसी भूमिका सिद्ध करता है, वही मेरे मन तो सच्चा आश्रम है ।'

श्रीमोटा के हृदय में 1946 तक आश्रम के निर्माण की सहज भावना जगी न थी । यह सहज भावना और प्रेरणा उनको 1955 में हुई, तब श्रीमोटा ने आश्रम निर्माण की संमति दी ।

(हरि:ॐ आश्रम, श्रीभगवानना अनुभव काजेनुं स्थळ, प्र.सं.पृ. 14 से 16 से संकलित)

साधना के लिए आधुनिक गुफाएँ

पूज्य श्रीमोटा ने अपने साधना काल दरमियान एकांतवास और आहार की बहुत सारी तकलीफें झेलीं । उन्होंने देखा कि, यदि एकांत मिलता है, तो आहार नहीं मिलता और आहार मिलता है तो, वह एकांत की कीमत चुकाने पर मिलता है । इसीलिए साधना के इच्छुक भाई-बहनों को एकांतवास भी मिलें और साथ आहार भी मिलें, ऐसी व्यवस्था करने के लिए उनको सद्गुरु की ओर से प्रेरणा प्राप्त हुई और इसीसे निर्मित हुए आज के ये मौनमंदिर ! आधुनिक सुविधा के साथ मानों प्राचीन युग की गुफाएँ ! (Old Caves with Modern Facilities.) इन मौनमंदिरों में सभी धर्म, सभी कौम, सभी जातियों के व्यक्तियों को बिना किसी प्रकार के भेदभाव प्रवेश दिया जाता है । सन् 1955 के साल से इन मौनमंदिरों की शुरूआत हुई तब से लेकर आज तक हज़ारों भाई-बहन इनका लाभ ले चुके हैं, जिसमें सात साल के किशोर से लेकर 100 साल के वृद्धों का समावेश होता है । हिन्दू, जैन, मुसलमान, पारसी, इसाई और बौद्ध सभी धर्मों के व्यक्तियों ने इनका लाभ लिया है । गुजरात के उपरांत, अन्य राज्यों के व्यक्तियों ने एवं थोड़े परदेशियों ने भी इन मौनमंदिरों का लाभ लिया है । रजस्वला स्त्री भी मौनकक्ष में बैठ सकती है । थोड़े महीनों की आयु के अपने शिशु के साथ मौनकक्ष में बैठनेवाली बहनों की दो पीढ़ियाँ हरि:ॐ आश्रम ने देखी है ।

हरि:ॐ आश्रमों के पते

पूज्य श्रीमोटा द्वारा स्थापित दो आश्रम, जहाँ मौनमंदिर की सुविधा उपलब्ध है उनके पते निम्न लिखित है ।

(1) हरि:ॐ आश्रम, जहांगीरपुरा, कुरुक्षेत्र महादेव मंदिर पास, रांदेर, सूरत-३९५००५, भ्रमणभाष : +९१ ९७२७७ ३३४००
सुरत रेलवे स्टेशन से यह आश्रम नौ (9) कि.मि. की दूरी पर है । रिक्षा या सिटी बस से (रेलवे स्टेशन से जहांगीरपुरा रुट नं. 115 से) आश्रम पहुँचा जा सकता है । कुरुक्षेत्र बस स्टोप से आश्रम नजदीक है । अडाजण बस डिपो से वरियाव की ओर जानेवाली बसें भी, कुरुक्षेत्र बस स्टोप पर रुकती हैं । आश्रम की बगल में कुरुराज महादेव का मंदिर है और मंदिर के पास नदी के तट पर कुरुक्षेत्र की स्मशानभूमि है । इस आश्रम में नौ (9) मौनमंदिर हैं।

(2) हरि:ॐ आश्रम, पोष्ट बोक्ष नं. ७४, शेढी नदी,
दख्खणीओ ओवारो, बीलोदरा, नडियाद-३८७००१,
मोबाईल : + ९१ ७८७८० ४६२८८ नडियाद रेलवे स्टेशन से कपड़वंज के मार्ग पर करीब पाँच कि.मि. की दूरी पर यह आश्रम स्थित है । एस. टी. स्टेन्ड से (स्टेशन बस डिपो से) वीणा, महुधा, कठलाल, कपड़वंज, घोडासर, रींछोल, महिसा आदि गाँवों की ओर जानेवाली बसों में बैठकर आश्रम पहुँचा जा सकता है । रेलवे स्टेशन से रिक्षा से भी आश्रम पहुँच सकते हैं । इस आश्रम में नौ (9) मौनमंदिर है ।

मौनमंदिर में प्राप्त सुविधाएँ

मौनमंदिर का सब से छोटा कक्ष 10' × 12' का है और सब से बड़ा कक्ष 20' × 20' का है । सोने के लिए झूला-खाट है। लिखने-पढ़ने और भोजन के लिए टेबुल-कुर्सी है । पूजा में

बैठने के लिए पीढ़ा भी है। दीवाल घड़ी, ऐलार्म, पीने के पानी की मटकी आदि साधन-सामग्री कक्ष में रखी गई हैं। एक छोटे टेबुल पर पूज्य श्रीमोटा की तसवीर रहती है। साधक यदि चाहे तो, उस स्थान पर अपने इष्टदेव की तसवीर रख सकता है। कक्ष से संलग्न अलग टॉइलेट-बाथरूम की व्यवस्था है। छोटा-सा स्टोर है। पुस्तकों की छोटी भित्ति-अलमारी है, जिसमें पूज्य श्रीमोटा द्वारा रची गई और श्रीमोटा के सम्बन्ध में लिखी गई करीब 150 पुस्तकें है। फिर भी साधक यदि चाहें, अपनी पसंद की धार्मिक पुस्तकें अपना साथ ला सकता है। कक्ष में लाइट (बीजली) की सुविधा है, परंतु पंखा नहीं है। जिन्हें पंखा चाहिए, वह हस्त-पंखे का उपयोग कर सकता है। इमर्जन्सी बेल की व्यवस्था है, अनिवार्यता के समय इसका तत्काल उपयोग किया जा सकता है। साधक को मौनकक्ष में प्रवेश देने के बाद, दरवाजे को बाहर से ताला लगा दिया जाता है। दरवाजे की बगल में 15'' × 24'' की एक खिड़की है, जिसमें बाहर से और भीतर से बंद किया जा सके, ऐसे उसके दो दरवाजे हैं। दिन में तमाम चीजवस्तुओँ का लेना-देना इस खिड़की से होता है। परंतु इस लेन-देन के समय बाहर के व्यक्ति के साथ बोलना मना है। जरूरत पड़ने पर चिठ्ठी लिखकर अपना काम कराया जा सकता है। प्रत्येक मौनमंदिर में केवल एक व्यक्ति ही रह सकता है। सिलिंग से सटकर लगे हुए वेन्टिलेटरों को छोड़कर कोई खिड़की न होने से कक्ष में दिन में भी करीब करीब अंधेरा होता है। अंधेरा, ध्यान और एकाग्रता के लिए आवश्यक भी है और सहायक भी।

दैनिक कार्यक्रम

(1) प्रातः 3.30 बजे उठना, (2) 4.30 बजे स्नान के लिए गर्म पानी बाथरूम में नल के जरिए आएगा, (3) 4.45 बजे सुबह की चाय, (4) 5.00 बजे कपड़े, चद्दर आदि धोने के लिए देना, (6) 5.45 बजे फूल-धूप, (6) 10.00 बजे सुबह का भोजन, (7) 1.40 बजे दुपहर की चाय, (8) 4.00 बजे धूप, (9) 5.00 बजे शाम का भोजन, (10) 8.00 बजे शयन ।

चाय या कॉफी या मसाला (जल, शक्कर और मसाला मिश्रित गर्म दूध) मिलता है । पहले से सूचित किया हों तो बिना शक्कर का भी मिलेगा । मिर्च और बिना मिर्च का भोजन (जैसा सूचित किया हों) मिलता है । दुपहर या शाम के भोजन में दूध, दहीं या छाछ नहीं दिया जाता, फिर भी जिन्होंने पहले से ये चीजें दर्ज कराई हों, उनको अलग चार्ज लेकर दिया जाता है ।

आश्रम में तली हुई चीज या मिठाई नहीं बनाई जाती । मौन-कक्ष में प्रभुस्मरण करने वाले व्यक्ति को संपूर्ण सात्त्विक आहार की आवश्यकता रहती है । इस बात का विशेष ध्यान रखा जाता है । आश्रम के स्वजनो की ओर से प्रसंग विशेष पर भी भोजन की भेंट स्वीकार नहीं की जाती है । स्वजनों की ओर से प्रेमपूर्वक दी गई रू. 351/-की दान राशि रसोई घर के निमित्त ली जाती है, जिसमें से आश्रम की दिन-प्रतिदिन की रसोई बनती है और मिठाई या प्रसाद के रूप में आश्रम में ही कंसार (गेहूँ के आटे का हलुआ) बनाया जाता है ।

व्यक्तिगत कार्यक्रम

उपर दर्शाया हुआ कार्यक्रम मौनमंदिर में बैठने वाले साधक की आवश्यकताओं का प्रबंध करने के लिए है और उसका समयबद्ध पालन करना ज़रुरी है, जिससे कि साधक को उचित समय पर जरुरी चीज-वस्तुओं की सेवाएँ मिलती रहें । समयबद्धता का पालन न हों तो, साधक को सुविधा न मिलें और आश्रम के

अपने कार्यक्रम में विक्षेप हो जाएँ । सेवा के सूचित समय को छोड़कर शेष समय में साधक अपना कार्यक्रम बना कर अपनी रीति से साधना कर सकता है ।

मौनमंदिर में जो नामस्मरण होता है, उससे चित्त की शुद्धि होती है, साधक पर सात्त्विक संस्कार पड़ते हैं और वे संस्कार वज्रलेप बनकर चित्त से चिपक जाते हैं । ये सात्त्विक संस्कार ही तमाम अवरोधों को दूर कर साधक के अध्यात्म का मार्ग प्रशस्त करते हैं । एकांत और नामस्मरण से लाभान्वित होकर चित्त शुद्धि के आशय से कई साधक तो हर साल और कितने तो साल में दो बार मौनमंदिर का लाभ लेने के लिए आश्रम में आते हैं ।

मौनमंदिर का अर्थ, मौनकक्ष में 'बोलना नहीं' ऐसा नहीं है । मौनमंदिर में साधक ऊँची आवाज से नामस्मरण कर सकता है, ऊँची आवाज में भजन गा सकता है और भावावेश में नाच-कूद भी कर सकता है । मौन एकांत की साधना को अध्यात्म के मार्ग में महत्त्वपूर्ण साधन के रूप में गिना गया है । मौन याने मात्र वाणी का मौन ऐसा नहीं, परंतु वृत्तियों और विचारों का मौन । ऐसे मौन के जरिए विविध दिशाओं में विकेन्द्रित हो जानेवाली शक्ति, अंतःकरण में एक बिंदु पर केन्द्रित हो जाती है और साधना में वेग जगाती है । इस तरह, बहिर्मुखी वृत्तियों को अंतर्मुखी करते 'स्व' की पहचान पाने के लिए यह मौनमंदिर एक आदर्श स्थल है ।

मौनमंदिर में पूज्य श्रीमोटा की चेतनाशक्ति कार्य करती है । इस साधनाकक्ष में पहले जो आ चुके हैं, उन साधकों के द्वारा हुए नामस्मरण से भी यह स्थल चेतन-सभर बना हुआ है । नामस्मरण के पवित्र जल से साधक तन-मन से फूल की तरह बोझ मुक्त और प्रफुल्ल बन जाता है । आश्रम के मौनमंदिर की इस तरह की बार बार की सोहबत से मनुष्य संसार के संतापों के बीच रहते

हुए भी, उनके ताप का अनुभव नहीं करता, क्योंकि मौनमंदिर के संस्कार, जो उसमें बस गए हैं, वे उसे उसकी आध्यात्मिक शांति में सहायरूप बनते हैं ।

आरंभ में कठिनाइयाँ

मौनमंदिर में पहली बार बैठनेवाले साधकों में से किसी किसी को अंधेरे से डर लगता है । किसी को घुटन महसूस होती है । अतिशय बहिर्मुखी प्रकृति के व्यक्तियों को, यहाँ आकर फँस गए-सा लगता है । परिणाम स्वरूप वे 'मुझे बाहर निकालो' ऐसी विनती करते हैं । उनको ढाढ़स बंधा कर मन शांत रखने के लिए समझाया जाता है । दूसरे दिन उनकी विकलता बहुत कुछ कम हो जाती है और तीसरे दिन से उनको इतने आनंद का अनुभव होता है कि सप्ताह के अंत में मौनमंदिर से बाहर निकलते उनको बड़ा दुःख होता है । इसीलिए इस मौनमंदिर में फिर आने का इस भगवदीय आनंद को पुनः पाने का वे निर्णय करते हैं ।

मौनमंदिर में जितने दिन रहना होता है, उतने दिन बाहर के जगत के साथ कोई व्यवहार नहीं होता । टी.वी., अखबार, डाक, फोन सब बंद । परिवार में कोई असाधारण घटना घटे अथवा व्यापारी हो और दुकान में कुछ अवांछित बात बने, उसकी सूचना मौनकक्ष में बैठे हुए व्यक्ति को, यदि वह चाहे तब ही दी जाती है ।

कक्ष में शरीर अस्वस्थ हो तो, उसकी सामान्य दवाई आश्रम में से दी जाती हे । विशिष्ट प्रकार की दवाई बाजार में से खरीद कर दी जाती है । आश्रम में कोई पूरे समय का डॉक्टर नहीं हे ।

परंतु आश्रम के बहुत से स्वजन डॉक्टर हैं, इसलिए इमर्जन्सी में आवश्यक चिकित्सा, समय पर देने के तमाम प्रयत्न आश्रम करता है ।

मौनमंदिर में बैठने की विधि

- ये मौनमंदिर पूरे गुजरात में एवं अन्य राज्यों में भी अत्यधिक सुविख्यात होने के कारण, इसमें बैठने का रिज़र्वेशन बहुत पहले कराना जरुरी है । (फिलहाल करीब एक वर्ष का बुकिंग हुआ है) नाम दर्ज किया हो, और किसी का रिजर्वेशन रद्द हो तो तदनुसार जल्दी लाभ मिल सकता है ।
- मौनमंदिर में प्रवेश के लिए इच्छुक व्यक्ति, उपर दर्शाए गए दो में से किसी एक आश्रम के प्रबंधक को पत्र लिखकर अपना रिजर्वेशन निश्चित करा सकता है । फोन पर भी पूछा जा सकता है । लेकिन पत्रव्यवहार ज्यादा उचित होगा ।
- मौनमंदिर में साधक कम से कम सात दिन और उसके गुणांक में 14, 21 या इनसे भी ज्यादा दिनों के लिए एक साथ मौन में बैठ सकता है ।
- आश्रम में हर रविवार को सुबह छः बजे समूहप्रार्थना होती है । इस प्रार्थना के बाद, सुबह सात बजे मौनमंदिर में प्रवेश लेना होता है और अवधि पूरी होने के रविवार को सुबह 5.30 बजे बाहर निकलना होता है ।
- दूर के शहर या गाँव के व्यक्ति को चाहिए कि, वह मौन में बैठने के अगले दिन (एक दिन पहले) शनिवार की शाम को आश्रम में पहुंच जाएँ । स्थानिक व्यक्ति अथवा जिसके सम्बन्धी सुरत में रहते हैं, ऐसा व्यक्ति रविवार की सुबह आश्रम पर

आए तो भी चलेगा। नडियाद आश्रम के मौनमंदिर में बैठनेवाले को चाहिए कि, वह वहाँ के प्रबंधक की सूचनानुसार आश्रम पर पहुँचे ।

- मौन में बैठने वाले साधक को, जो चीज-वस्तुएँ अपने साथ लानी है, वे इस प्रकार हैं । दो-तीन जोड़ी कपड़े, तौलिया, टूथब्रश, अपना टॉइलेट सामान, गुग्गल या लोबान का धूप, मेच-वोक्स, मोमबत्ती, टार्च, रोजाना उपयोग में आनेवाली दवाइयाँ और अपना मनपसंद धार्मिक साहित्य ।
- दूरस्थ शहर या गाँव से आनेवाले साधक को चाहिए कि, वह अपने आने-जाने का (रेलवे या बस का) रिजर्वेशन खुद करा लें। आश्रम के पास इस सुविधा के लिए स्टाफ उपलब्ध नहीं हैं ।
- मौनमंदिर में बैठने का शुल्क टोकन के रूप में एक सप्ताह के केवल 35 रुपये के हिसाब से लिया जाता है । इसके उपरांत यदि साधना-प्रेमी चाहे तो, मौनमंदिर की ऐसी प्रवृत्ति के लिए अपनी इच्छानुसार दान-राशि दे सकते हैं । ऐसे दाताओं की दान-राशि के कारण ही मौन में बैठनेवाले से इतनी अल्प-राशि लेते हुए भी, आश्रम अपनी सद्प्रवृत्तियाँ जारी रख सका है । जो व्यक्ति 35 रूपए भी नहीं दे शकता है, वह प्रबंधक से बात करके अपनी शक्ति के अनुसार जो देना चाहे दे सकता है ।
- किसी परिस्थिति के कारण किसी व्यक्ति को अपने मौन का कार्यक्रम रद करना पड़े तो, पहले से रिजर्व किए दिनों में मौनमंदिर में न बैठ सकने की सूचना उसे आश्रम के प्रबंधक को पत्र द्वारा अथवा फोन से यथा शीघ्र दे देनी चाहिए, जिससे अन्य व्यक्ति को इसका लाभ दिया जा सकें.

अनुशासन का पालन

- मौनमंदिर में बैठनेवाले व्यक्ति को, साधना अपनी रीति से करने की पूरी स्वतंत्रता है, फिर भी थोड़ा, अनुशासन का पालन उसे करना पड़ेगा ।
- मौनमंदिर में जो चीजें ले जाने की मनाही है, वे इस प्रकार है : खानेपीने की चीजें, व्यसन की चीजें, शराब, नशा करने की टेबलेट्स, रेडियो, टेप-रेकार्डर, विडियो-गेम, मोबाइल फोन, पोर्टेबल टी.वी., लेपटोप कम्प्युटर आदि ।
- मौनमंदिर में निवास के दरमियान साधक दाढ़ी नहीं बनायेंगे।
- दुपहर के समय सोयेंगे नहीं ।

हरि:ॐ आश्रम स्थापना वर्ष १९५६ ट्रस्टी मंडल,

हरि:ॐ आश्रम, कुरुक्षेत्र श्मशानघाट, जहाँगीरपुरा,
सूरत-३९५००५, भ्रमणभाष : +९१ ९७२७७ ३३४००
Email : hariommota1@gmail.com
Website : www.hariommota.org

दिनांक : १५ अगस्त, २०१०

आश्रम की मुलाकात का समय : सुबह 6 से सांय 7
कार्यालय समय : सुबह 9 से 7
भोजन का समय : सुबह 10 से 10.30, सायं प से 5.30

मुद्रक : अर्थ कोम्प्यूटर
मुद्रणशुद्धि : जयंतीभाई जानी
डिझाइनर : मयूर जानी

॥ हरिः ॐ ॥

श्रीमोटा की संक्षिप्त जीवनकथा

हमारा भारत देश नररत्नों की खान है। इस पावन भारतमाता की कूख से असंख्य विश्वप्रसिद्ध अवतारी महापुरुष श्रीराम, श्रीकृष्ण, भगवान महावीर, भगवान बुद्ध और संत श्रीकबीर, श्रीनानक, श्रीतुलसीदास, श्रीसूरदास, श्रीज्ञानेश्वर, श्रीतुकाराम, श्रीनामदेव, आदि शंकराचार्य, श्रीवल्लभाचार्य, श्रीमाधवाचार्य, महाप्रभु चैतन्य, स्वामी रामकृष्ण परमहंस, स्वामी विवेकानंद, स्वामी रमण महर्षि, श्रीअरविंद आदि पैदा हुए हैं।

इन्होंने हमारी सनातन संस्कृति का झंडा पूरे विश्व में लहरा कर विश्व को सत्य, प्रेम, अहिंसा, करुणा, क्षमा, उदारता और सहिष्णुता आदि दिव्य गुणों की पावन गंगा में सराबोर करके 'वसुधैव कुटुम्बकम्' का महान सूत्र देकर विश्व को मानव एकता का महान संदेश देकर मानवता का रक्षण किया है।

वर्तमान में भी श्रीयोगानंदजी, श्री हैडाखान बाबा, श्रीमहाअवतार बाबा, श्रीनीमकरोली बाबा, श्रीजयदयाल गोयन्दकाजी (श्री सेठजी), श्री हनुमानप्रसाद पोद्दारजी (श्रीभाईजी), स्वामी श्रीरामसुखदासजी, स्वामी श्रीशरणानंदजी आदि मानवता के मसीहा हुए हैं। और भी होते रहेंगे यह निर्विवाद सत्य है।

किन्तु इन सभी महापुरुषों से बिलकुल अनोखे एकदम निराले अवतारी महापुरुष श्रीमोटा हमारे गुजरात में हो गए हैं। वैसे तो वे अवधूत दिगम्बर परंपरा के महात्मा थे। किन्तु आपश्रीने श्रीसद्गुरु श्रीकेशवानंदजी धूनीवाले दादा (सांइखेडा-खंडवा, मध्यप्रदेश) की आज्ञा से गृहस्थी का वेश अपनाकर अपनी देहातीत, गुणातीत और द्वन्द्वातीत अवस्था की महानता को अत्यंत सादगी और नम्रता की चादर ओढकर गृहस्थाश्रमी वेश में छुपाकर रखी थी।

श्रीमोटा के शरीर का जन्म भाद्रपद कृष्ण पक्ष की चतुर्थी वि. सं. १९५४, ई. स. १८९८, सितम्बर मास की चौथी तारीख को सावली (जि. वडोदरा, गुजरात) में हुआ था। उनके पिताजी का नाम आशाराम और माताजी का नाम सूरजबा था। श्रीमोटा के दादा और पिता भजनानंदी जीव थे। इसलिए उनका उपनाम भगत था। उनके बड़े भाई का नाम जमनादास था। दो छोटे भाई के नाम अनुक्रम से मूलजीभाई और सोमाभाई थे।

श्रीमोटा छोटे बालक थे, तब एक ब्राह्मिनने उनका बायाँ हाथ देखा था। उस हाथ की कलाई पर काला लच्छन था और हथेली की रेखा में त्रिशूल को देखकर श्रीमोटा की माताजी सूरजबा को बताया था कि 'माई, तेरा ये लाल बहुत बड़ा आदमी बनेगा या बहुत बड़ा संत बनेगा। बाद में एक साधु-महात्मा ने भी आगाही की थी कि माई तेरा ये बेटा बड़ा धर्मात्मा बनेगा।'

श्रीमोटा के जन्म के कुछ वर्ष बाद उनके पिताजी का रंगरैजी का धंधा टूट गया। इससे वे सावली छोड़कर कालोल (जि. पंचमहाल, गुजरात) में आ बसे। पिताजी की कमाई कम और कुटुम्ब बड़ा। इससे माता सूरजबा गाँव के सुखी कुटुम्बों में अनाज पीसने-कूटने की मजदूरी का काम करतीं थीं। मातापिता को कड़ी मेहनत करते देखकर श्रीमोटा भी अपनी छोटी उम्र में ईंटों के भट्टे पर गरम गरम ईंटें उठाते थे। राजगीर का काम भी किया। आसपास के खेतों में कपास बीनने जाते। मुसलाधार बारिश में खेतों में पैर धस जाय ऐसे कीचड़ में धान बोआई की मजदूरी की।

ऐसी दारूण गरीबी में कड़ी मजदूरी करते-करते प्राथमिक शिक्षण कालोल में पूरा करके आगे पढ़ने

पेटलाद गये । वहाँ के श्रीजानकीदासजी और अहमदाबाद के श्रीसरयुदासजी जैसे समर्थ महात्माओं के आशीर्वाद से अच्छे नंबर से मैट्रिक की परीक्षा पास की । बाद में बी. ए. की पढ़ाई के लिए ई.स. १९१९-२०में वडोदरा कोलेज में दाखिल हुए। उसके बाद गांधीबापू प्रेरित नवजीवन विद्यापीठ, अहमदाबाद में दाखिल हुए। बी. ए. की डीग्री प्राप्त करने में दो-तीन मास थे। किन्तु गांधीबापू की देशसेवा की हाकल के प्रत्युत्तर में डीग्री का मोह छोड़कर हाथ में गंगाजल लेकर देशसेवा का व्रत लिया, जिससे मन कहीं ललचा न जाय । सन १९२१ में श्रीमोटा को अच्छे वेतन से परदेश में खासकर आफ्रिका में शिक्षक की नौकरी मिलती थी । उसका अस्वीकार करके उससे कहीं कम वेतन में गांधीबापू के हरिजन सेवक संघ में बालकों को पढ़ाने शिक्षक की नौकरी स्वीकार की ।

यह एक बहुत बड़ी चुनौती थी। क्योंकि उस समय अस्पृश्यता का बहुत भारी जोर था । हरिजन बालकों की सँभाल के लिए उच्च वर्णों के लोगोँ के साथ प्रतिदिन की मुठभेड़, कम वेतन में सात-आठ व्यक्ति का कुटुम्ब निभाना आदि कारणों से श्रीमोटा को मिरगी का रोग लागू पड़ गया ।

ऐसे तनावग्रस्त रोग के निवारण के लिए नर्मदामैया के तट के एक महात्मा ने 'हरि:ॐ' का मंत्रजाप करने का उपाय बताया । किन्तु वह उपाय नहीं किया । बाद में रोग की तीव्रता से ऊब कर गरुडेश्वर (जिला-नांदोद, गुजरात) की एक उँची कगार पर से नर्मदामैया में शरीर का अंत करने के लिए कूदे। किन्तु चमत्कारिक रूप से बच गए। बाद में उसी महात्मा और उनकी आध्यात्मिक माता प्रभाबा की टकोर और अंत में गांधीबापू की सलाह से 'हरि:ॐ' का नामस्मरण किया और तीनक महीने में मिरगी के रोग से मुक्ति पायी ।

प्रभुनाम स्मरण में कुछ श्रद्धा, विश्वास हुए । शरीर के रोग से मुक्ति पाने का ध्येय प्राप्त हो गया । इससे प्रभु- नामस्मरण से प्रभुप्राप्ति-जीवनमुक्ति का ध्येय निश्चित हुआ । इसकी पूर्ति के लिए ई.स. १९२१ के अंत भाग में यानी कि लगभग डिसम्बर मास में श्रीबालयोगी का मिलन अहमदाबाद में हुआ । श्रीमोटा को उनकी अलौकिक शक्ति का परचा मिला । जिससे उनके द्वारा कुछ लाभ प्राप्त हो ऐसी प्रार्थना श्रीमोटा ने की थी ।

श्री बालयोगीजी तो अंतर्यामी थे । उस प्रार्थना के प्रत्युत्तर में वे ई.स. १९२२ में नडियाद पधारे और वसंतपंचमी, २ फरवरी के दिन श्रीकेशवानंदजी धूनीवाले दादा (सांइखेडा-खंडवा, म.प्र) की आज्ञानुसार श्रीमोटा को साधना में दीक्षित किये और श्री धूनीवाले दादाजी को अपना गुरु स्वीकार कर उनसे मिलकर साधनामार्ग में आगे बढ़ने का आदेश दिया ।

इस आदेशानुसार श्रीमोटा सांइखेडा (म.प्र.) जाकर श्री धूनीवाले दादाजी को मिले । श्री धूनीवाले दादाजी ने श्रीमोटा को हरिजन सेवक संघ की नौकरी में ही चालू रहकर हरिस्मरण, प्रार्थना, आत्मनिवेदन, समर्पण, अभय, नम्रता, मौन और एकांत ये आठ साधन विकसित करके साधना-भक्ति करने का आदेश दिया ।

श्रीमोटा ऐसे ही यौवनकाल से समाजसेवक और उत्तम देशप्रेमी थे। श्रीमोटा का समाजसेवा और देशसेवा का जुनून उनके श्रीसद्‌गरु श्रीधूनीवाले दादाजी ने प्रभुभक्ति में मोड़ दिया । जैसे श्रीकृष्ण भगवान ने स्वातंत्र्य संग्राम सेनानी श्रीअरविंद घोष को प्रभुभक्ति में मोड़ दिये थे । अन्यथा श्रीमोटा एक बड़े पक्के साम्यवादी बन जाते। क्योंकि बचपन की दारुण गरीबी में प्रतिदिन के जीवन में अनेक यातनापूर्ण अन्याय कदम-कदम पर सहने पड़े थे ।

श्रीधूनीवाले दादाजी के आदेशानुसार श्रीमोटा ने ई. स. १९२२ से अपनी साधनायात्रा आरंभ की । उसकी

पूर्णाहुति ई. स. १९३९ में निर्गुण ब्रह्म के साक्षात्कार के परमपद की प्राप्ति के साथ हुई ।

इन सत्रह वर्षों की साधनायात्रा दरमियान श्रीसद्गुरु द्वारा बताये हुए साधनों का प्रत्यक्ष आचरण करके उनके हुक्मों का अक्षरशः पालन किया और जिनके कोई न कोई साक्षी थे वैसे ही प्रसंग प्रकट किये हैं ।

गांधी बापू के राष्ट्रीय असहकार आंदोलन दरमियान ई. स. १९३० में यरवडा तथा ई. स. १९३२ में वीसापुर में जेलवास किया और एक तसु भी अपनी जगह से हटे बिना बेरहमी पुलिसों की लाठीमार खाई । साकुरी (शिरडी नजदिक, महाराष्ट्र) में श्रीउपासनी बाबा की उपस्थिति में ४-५ फूट में फैली स्वयं के मल-मूत्र की शय्या में भक्तों की सख्त पत्थर मार सहन करते-करते एकाग्रता से, ध्यान, समाधि में दस से ग्यारह दिन रहे ।

ई. स. १९३० में मन की नीरवता प्राप्त हुई।

ई. स. १९३४ में स्वयं का मल और मूत्र हररोज जो निकलता उसे ही खाकर चौबीस-पचीस दिन रहे । (मल-मूत्र की घिन पर संयम और कण-कण में भगवान ही हैं ! इसका प्रत्यक्षीकरण)

ई. स. १९३४ में सगुण ब्रह्म का साक्षात्कार

धुआँधार प्रपात (जबलपुर) की गुफा मे इक्कीस दिन की तपश्चर्या की । उस गुफा तक पहुँचना ही जान का जोखिम था । वहाँ प्रपात का जो पानी गिरता, उसकी आवाज इतनी भयंकर डरावनी थी कि कोई व्यक्ति टिक ही न सके ।

ई. स. १९३८मे ंकराची में समुद्र में चले जाने का हुक्म हुआ तो तत्काल समुद्र में चले गए । कमर तथा गले तक पानी आ गया किन्तु आगे बढ़ते ही गए । यह सोचा ही नहीं कि मेरा क्या होगा । कुछ घंटों के बाद समुद्र के किनारे पर पड़े थे । वहीं से चलकर घर को गये !

कराची में ही रमजान की ईंद के दिन पूरे शहर में नग्न घूमकर घर जाने का हुक्म मिला । शरीरभाव मिटाने मेहबूब का हुक्म मिला है, ऐसे भाव से उसका भी अक्षरशः पालन किया तो शरीरविहीन दशा का अनुभव हुआ । गुरुमहाराज प्रत्यक्ष उपस्थित हुए और श्रीमोटा को शाबाशी दी ।

ई. स. १९३९ मार्च मास की उन्तीस तारीख रामनवमी के दिन काशी बनारस में निर्गुण ब्रह्म का साक्षात्कार हुआ । **उसी क्षण से मुक्तता का अनुभव शुरू हुआ । मैं सर्वत्र विद्यमान हूँ । स्वयं सर्वत्र, सर्व समय, सकल ब्रह्मांड के अणु अणु में व्याप्त होते हुए भी स्वयं अलग हूँ। ऐसी द्वन्द्वातीत, गुणातीत, कालातीत और अवस्थातीत अवस्था के अनुभव में स्थित हो गए ।**

इस अवस्था की प्राप्ति के बाद हरिजन सेवक संघ की नौकरी त्यागपत्र देकर छोड़ दी और अपने आप मिलनेवाले स्वजनों को प्रभुभक्ति में मोड़ने मार्गदर्शक की श्रीप्रभु की नौकरी में जुड़ गए ।

इसके लिए श्रीसद्गुरु श्रीधूनीवाले दादाजी ने मौनमंदिर बनाने की आज्ञा दी । फलस्वरुप ई. स. १९५० में कुंभकोणम् में कावेरी नदी के किनारे, ई. स. १९५५ में नडियाद में शेढी नदी के किनारे और ई. स. १९५६ में सूरत में तापी नदी के किनारे मौनमंदिरों की स्थापना की जो हरिःॐ आश्रम के नाम से प्रसिद्ध है। **मौनमंदिर यानी व्यक्तिगत साधना के लिए स्नानघर, शौचालय, विद्युत आदि सुविधाओं से सुसज्ज आधुनिक गुफा ।**

श्रीसद्गुरु श्रीधूनीवाले दादाजी ने श्रीमोटा को एक और भी हुक्म दिया था कि समाज के पास से एक करोड़ रुपये उगाहकर मौलिक और अनोखे कार्य के रूप में समाज को वापस लौटा देना । इसके पालन के लिए श्रीमोटा ने ई. स. १९६१-६२ से ई. स. १९७६ की अवधि दरमियान रुपये एक करोड़ उगाहे और ऐसे विविध मौलिक कार्यों समाजोत्कर्ष के लिए किये जो बेहद अनुठे और अनोखे थे ।

श्रीसद्गुरु श्रीधूनीवाले दादाजी के वचन का पालन करते-करते शरीर की मर्यादा आ गई थी । शरीर समाजोपयोगी न रहने से उसका त्याग करने का निर्णय किया और जुलाई २२, १९७६ के दिन उनके एक भक्त श्री रमणभाई अमीन के फार्म हाउस मही नदी के तट पर फाजलपुर (जि. वडोदरा, गुजरात) में उसका अमल करके अपनी देहलीला समाप्त की ।

लेखक

रजनीभाई बर्मावाला 'हरिःॐ'

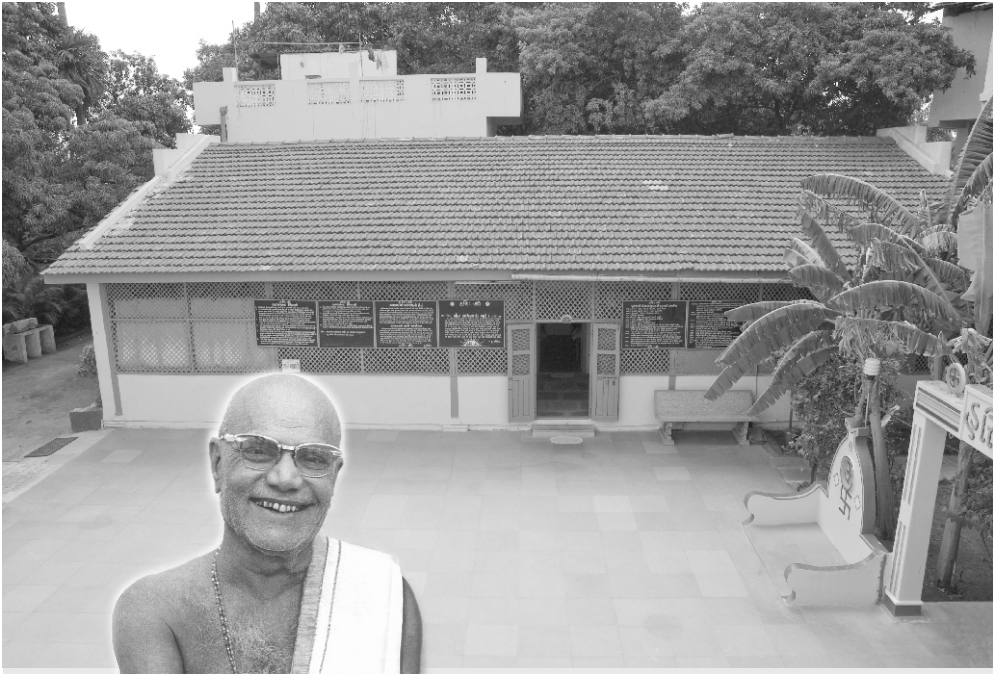

हरि:ॐ आश्रम और मौनमंदिर, सुरत